PDF Compressor Pro

Chanchal Rose

राज
कॉमिक्स विशेषांक
मूल्य 30.00 संख्या 2306

रक्तकथा

थ्रिल हॉररसस्पेंस

fenzz
02. OCEAN11

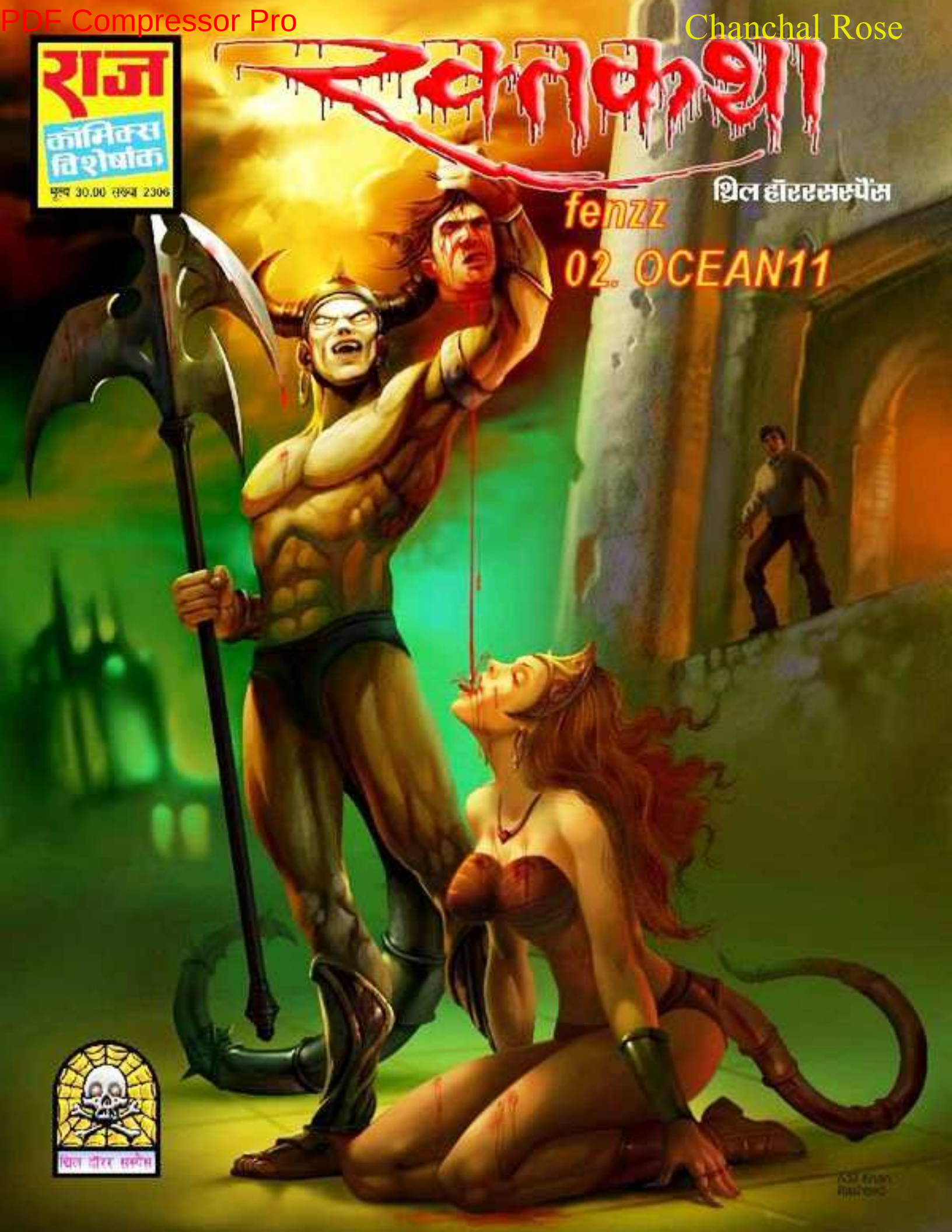

PDF Compressor Pro

Chanchal Rose

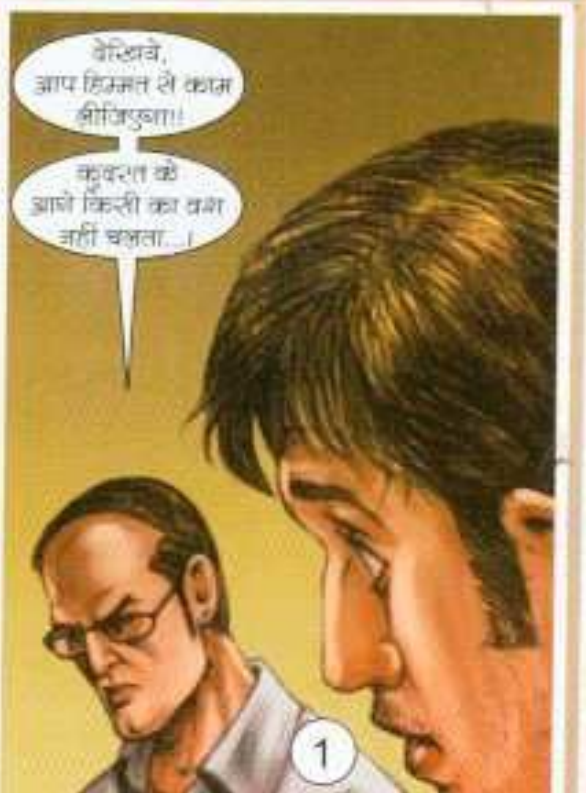

PDF Compressor Pro
Chanchal Rose

PDF Compressor Pro
Chanchal Rose

छः माह पहले तुम्हारी माँ का साया तुम्हारे सिर से उठ गया था और अब तुम खुद?

नहीं! नहीं!

मैं अपने सुरभ को कुछ नहीं होने दूंगा।

पापा! क्या हुआ? आप रो क्यों रहे हैं?

प....पच्चीस लाख का इंतजाम करूंगा बेटे। इंतजाम हो जाएगा। तुम घबराना मत।

पच्चीस लाख? क्या मेरी बीमारी पर इतना खर्च होगा? पच्चीस लाख कितने होते हैं पापा?

पच्चीस हजार में दो जीरो ज्यादा बेटे!

और आप अपनी बैंक पासबुक वहीं भूल गए थे। इसमें पच्चीस हजार रुपये हैं।

पच्चीस लाख में दो जीरो कम?

तेरी जिंदगी बचाने के लिये इन दो जीरों की कीमत मैं समझता हूं।

PDF Compressor Pro
Chanchal Rose

मेरी बालीस साल की जमापूंजी को वो हीरो ना बड़ा पाई जो तुम्हें जिंदगी दे सकते हैं।

मैं हार रहा हूं। मैं हार रहा हूं।

आपको हारना नहीं है।

आप ही तो कहा करते हैं कि सांसों का क्रम केवल शरीर को जिंदा रखना नहीं होता....

'संघर्ष' को जिंदा रखना भी होता है।

आपके पास टैलेंट है।

कलम की ताकत है।

आपका एक-एक शब्द एक-एक नोट हो सकता है।

और आप इससे पच्चीस क्या पचास लाख पैदा कर सकते हैं।

बेटे ने हिम्मत का फौलाद दिया था।

किसी फिल्म की ऐसी कहानी लिखूंगा जो मुझे पचास लाख रुपये दिलवा सके।

और उसके लिए ऐसी ही किसी खूबसूरत फ़ज़ा की जरूरत है। जहां मुझे कोई डिस्टर्ब ना करे।

PDF Compressor Pro
Chanchal Rose

50 लाख की कहानी!
लिखनी ही होगी!
लिखूंगा!!

नहीं! उफ! शुरुआत ठीक नहीं है! इसे पढ़कर कोई मुझे पचास रुपये भी नहीं देगा!
मुचड़ मुचड़!!!

पचास लाख की कहानी का पहला शब्द ही ऐसा होना चाहिए कि प्रोड्यूसर अंत तक एक ही सांस में उसे पढ़ जाए!
तभी तो दर्शक भी आखिर तक बैठा पायेगा!
उफ! दिमाग काम नहीं कर रहा!
सुरभा के लिए किडनी का इंतजाम भी करना है!
ऑपरेशन एक सप्ताह के अंदर जरूरी है!
जरूरी बवाल! हजारों खर्चा! उफ!

ओफ्फ!! रीफिल खत्म!!

एक्स्ट्रा रीफिल लेकर नहीं चला!

!

ये कलम है! बहुत पुरानी सी है!

इसमें भरी स्याही सूख चुकी होगी!
फिर भी चेक करता हूं!

PDF Compressor Pro

Chanchal Rose

PDF Compressor Pro
Chanchal Rose

अपराधियों के लिये इसकी कलम केवल एक ही दण्ड का फरमान लिखती है.... मृत्युदण्ड का।

ये लोग मुझे क्यों नहीं देख पा रहे?

ले जाओ इसे हाथी के पांव तले कुचल डालो।

अरे! राजा ने जिस कलम से मौत का फरमान लिखा है...

...वो तो ऐसी ही कलम है जैसी मेरे हाथ में है।

कुछ और कैदी लाए गए।

वे...ये सब क्या हो रहा है?

महाराजा इन्होंने अपने जानवर दूसरों के खेत में घुसा कर सारी खेती को उन पशुओं का भोजन बनवा डाला।

चोर को हाथी के पांव तले कुचलवा दिया गया।

PDF Compressor Pro
Chanchal Rose

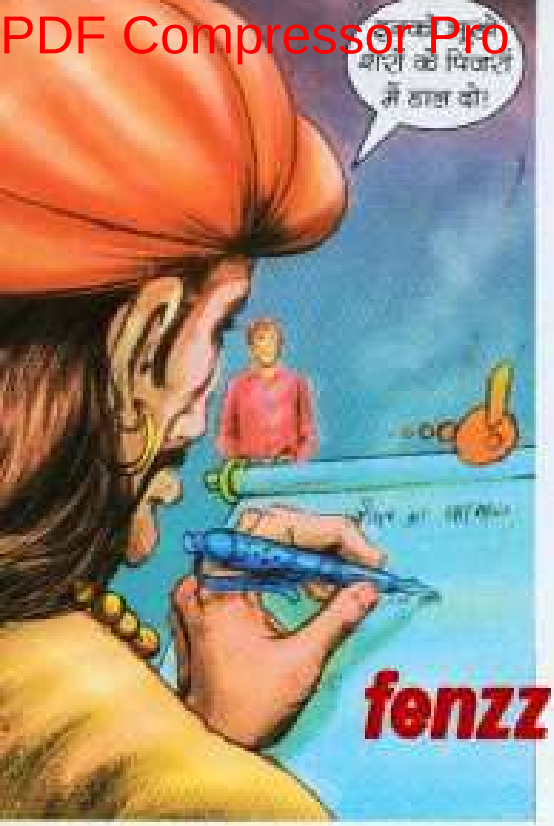

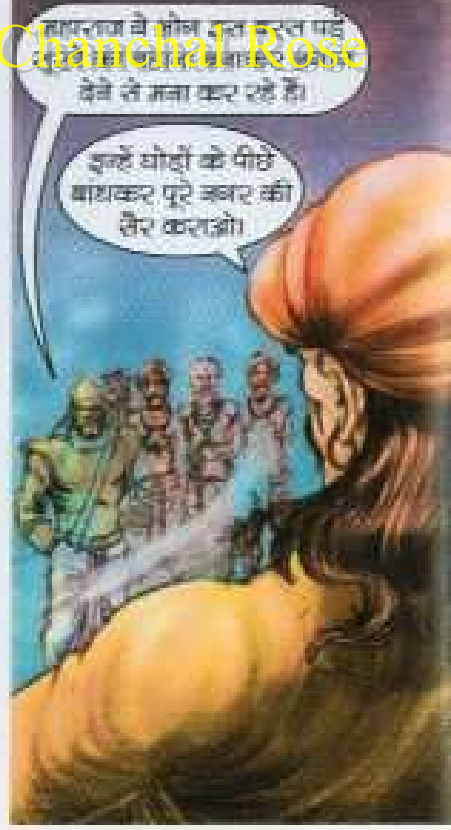

PDF Compressor Pro
Chanchal Rose

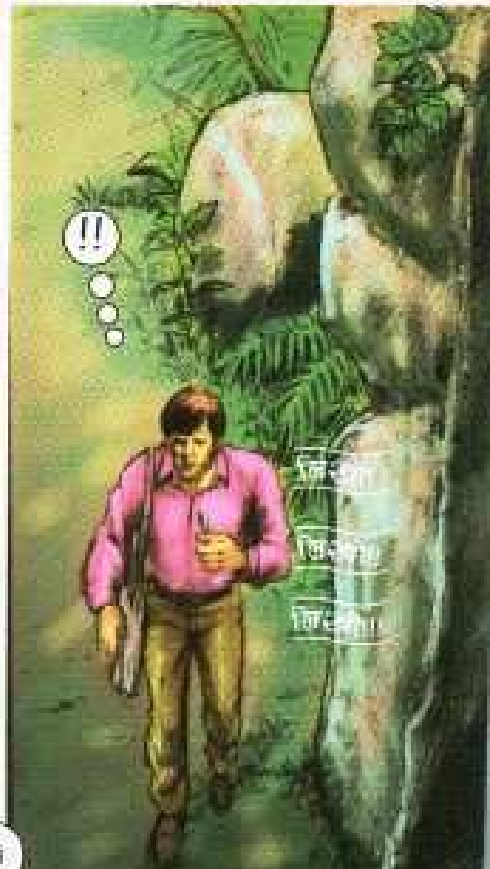

PDF Compressor Pro

Chanchal Rose

PDF Compressor Pro
Chanchal Rose

PDF Compressor Pro
Chanchal Rose

PDF Compressor Pro
Chanchal Rose

PDF Compressor Pro

Chanchal Rose

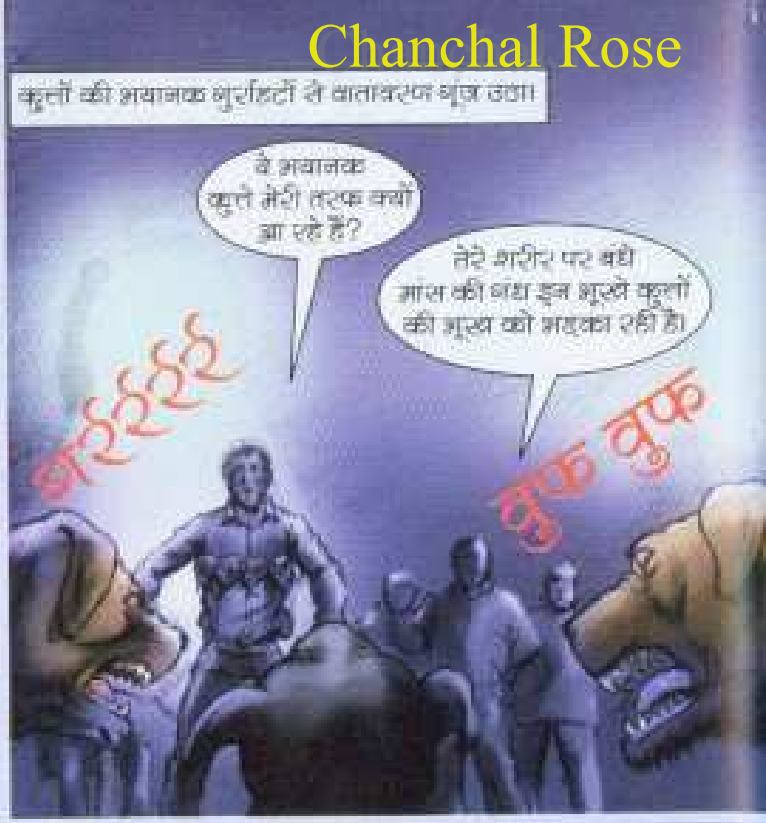

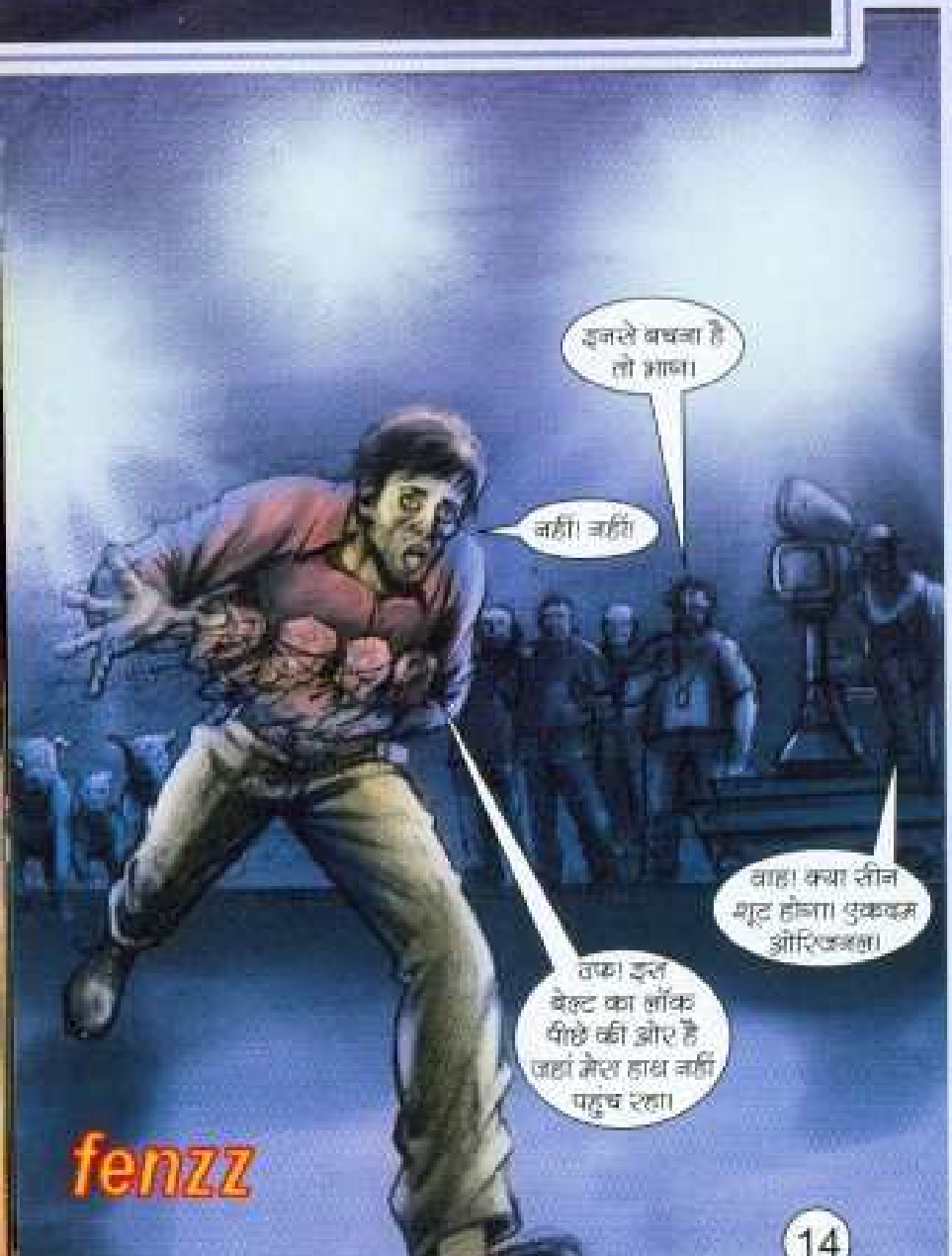

PDF Compressor Pro
Chanchal Rose

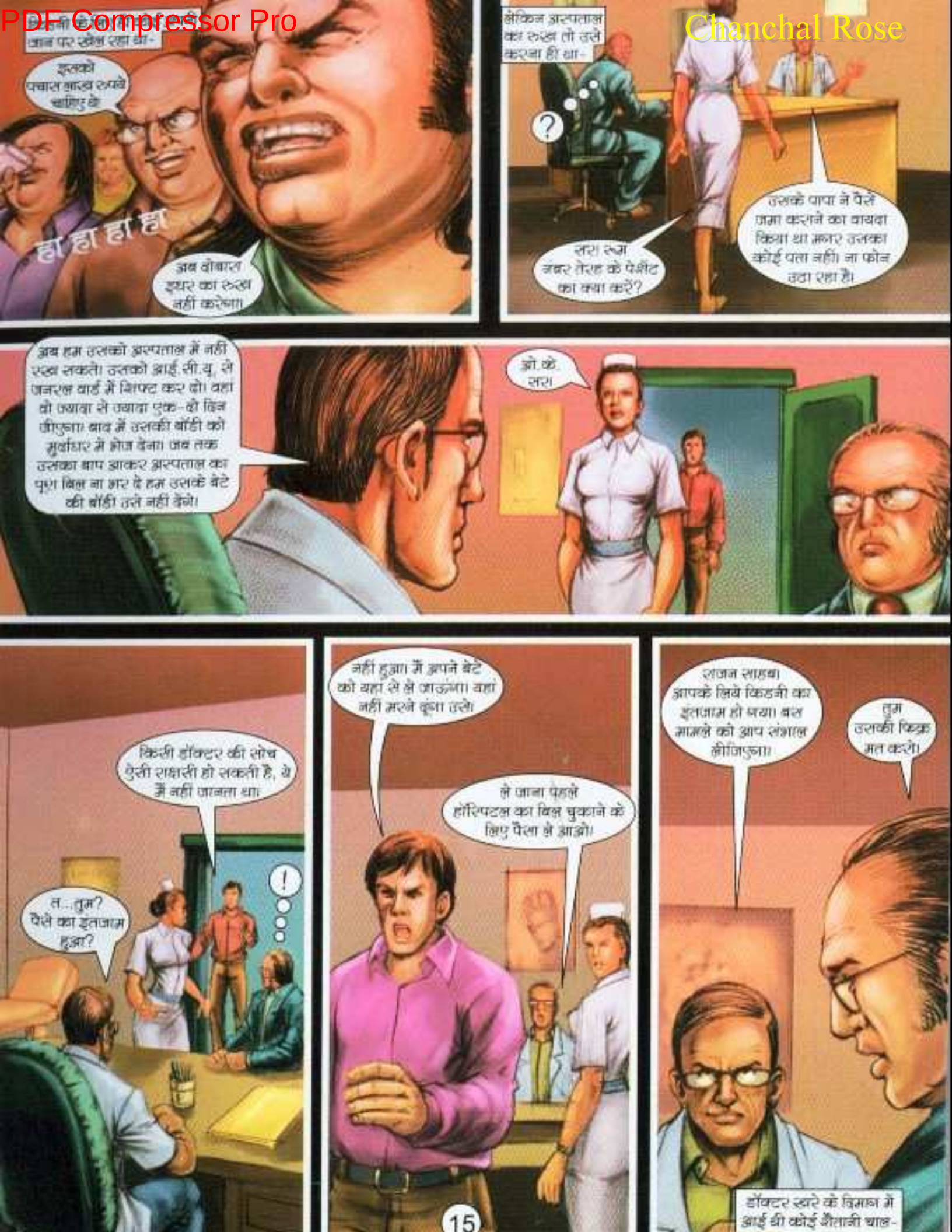

PDF Compressor Pro
Chanchal Rose

PDF Compressor Pro

हम नहीं मानते कोई प्रतिबंध, हमारा जुनून बना डालेगा हमें मौत का...

Chandhal Rose

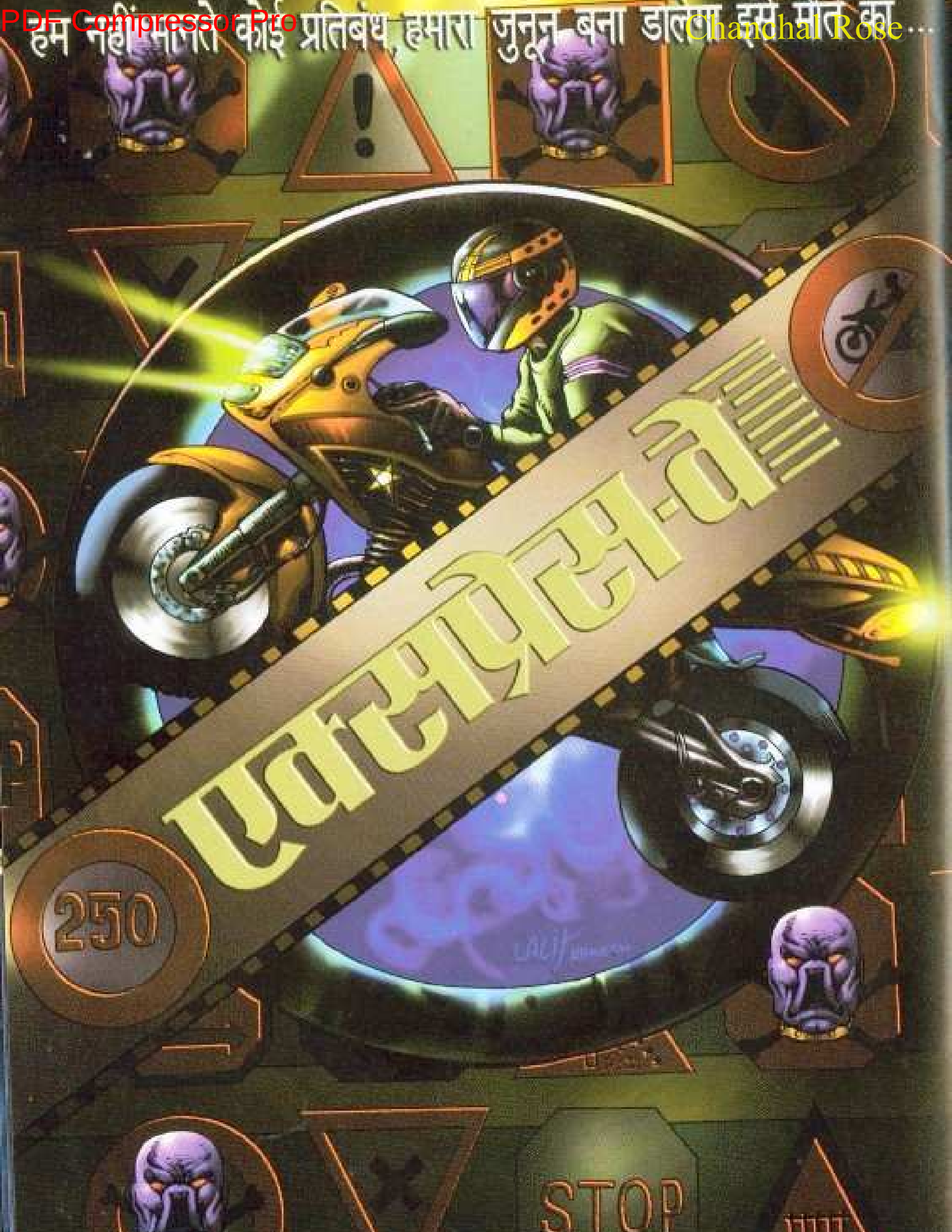

PDF Compressor Pro

Chanchal Rose

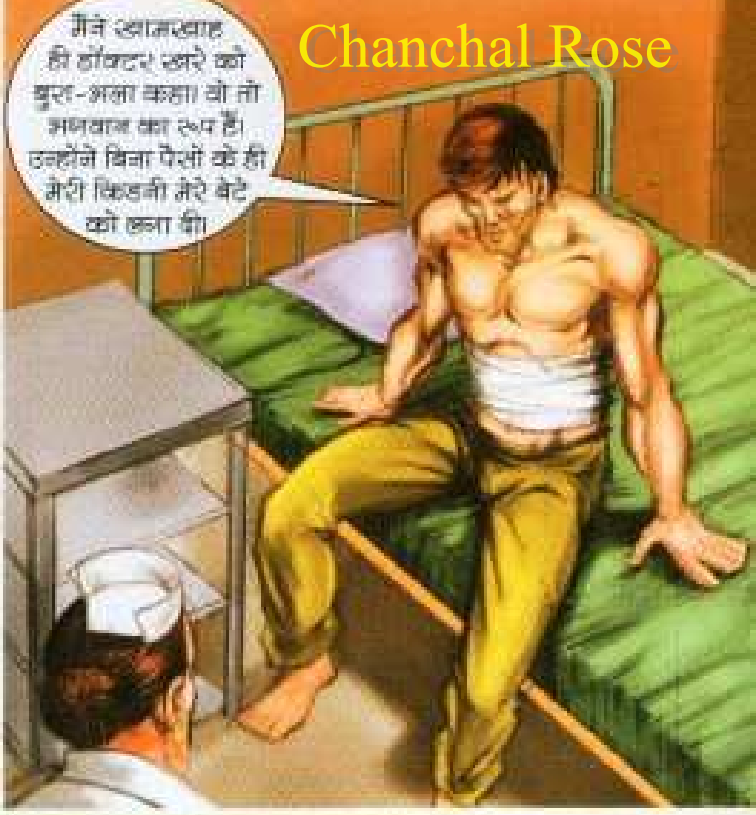

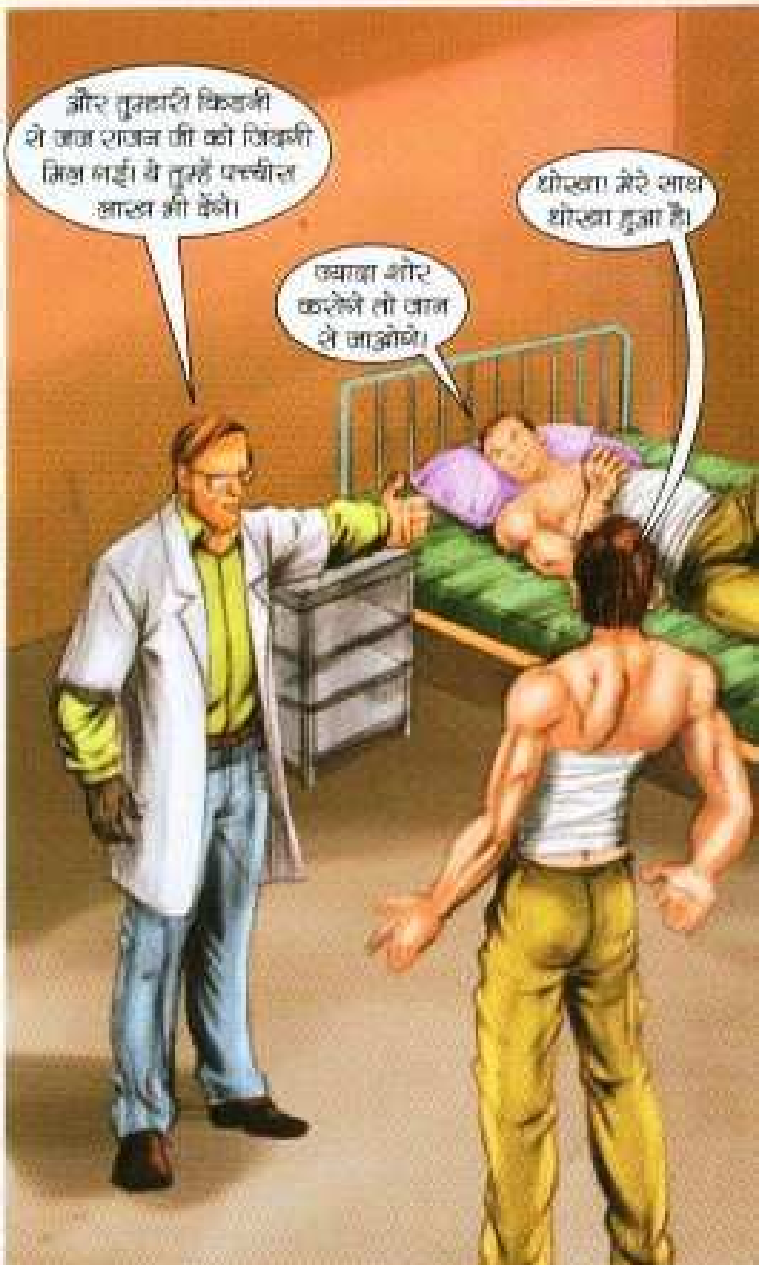

PDF Compressor Pro
Chanchal Rose

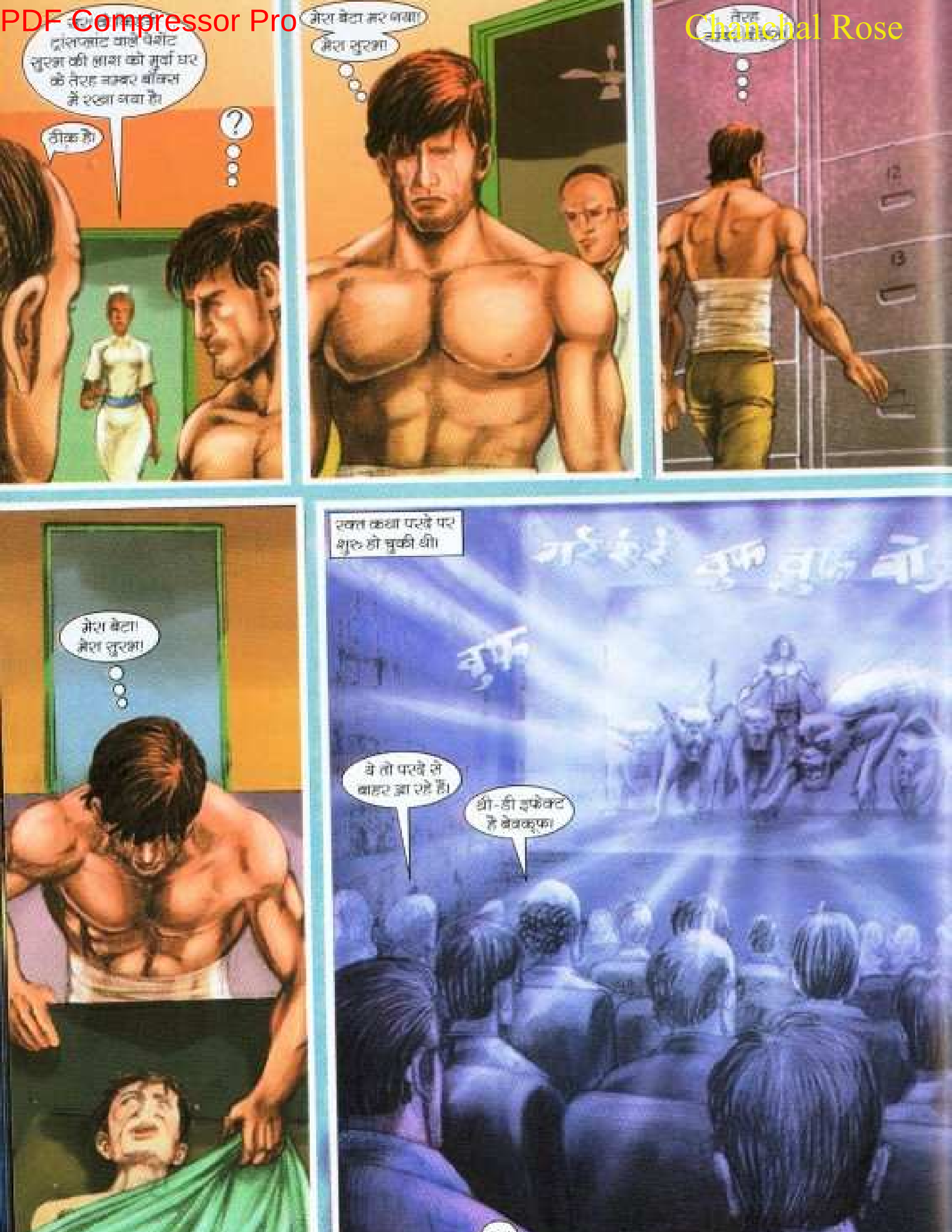

PDF Compressor Pro
Chanchal Rose

PDF Compressor Pro

Chanchal Rose

एक के बाद एक कई चीखें थ्रूजी हॉल में।

अरे चुप बैठ ना। क्यों फिल्म का मजा खराब कर रहा है बार।

भेड़िये लचमुच में पर्दे से बाहर आकर झपट रहे हैं।

चीखें तेज म्यूजिक में खो गई थीं।

चार लोग पलक झपकते ही लाशों में बदल गए थे।

उफ! कैसा वीभत्स दृश्य है। ऐसा लग रहा है भेड़िये वाकई लोगों को घसीट कर ले जा रहे हैं।

गर्र

कड़ च्च!!!

'थ्री-डी' फिल्मों के शौकीन तो मजा है कि सब कुछ एकदम असली दृश्यों की तरह दिखाता है।

मजा का इफेक्ट है थ्री-डी भी।

चीख रोपटे के मुंह से निकली थी।

आह!

खच्चाक

कौन होगा मेरे खंजर का पहला शिकार?

कक्ष से निकला मुर्दा कब्रिस्तान में गिरे पड़े खंजर उठा रहा है।

किस बंदर! आह! खंजर म...मुझे... आह... लगा है।

तुझे भी पी ली है क्या रोपटे? तेरे साथ यही प्रॉब्लम है। बड़ा हो गया लेकिन अभी तक डरता है।

PDF Compressor Pro
Chanchal Rose

PDF Compressor Pro
Chanchal Rose

चीख भला चीख भला वे सीन जब शूट हो रहा था तो हम ही आगे-पीछे कर रहा था।

बां!!!

हमने उस बेचारे राइटर चेतन को बेकार ही कुत्तों से कटवाकर मरवा डाला यार। अब ऐसी दूसरी फिल्म कौन लिखेगा?

तो क्या उसको पचास लाख दे देते? उसका नाम यहां मत ले बेवकूफ। पिक्चर देख पिक्चर।

वो देख भेड़िया कब्रिस्तान में कब्र खोद रहा है।

तुफ

खरच खरच

अरे! कब्र में से मोबाइल फोन कहां से निकाल लिया भेड़िये ने।

तुफ- वो कऽऽ

और अब मोबाइल फोन सहित जम्प लगाकर पर्दे से बाहर आ रहा है।

ऐसा सीन तो हमने शूट ही नहीं किया था।

ये फिल्म का सीन नहीं है। ये वास्तविक भेड़िये हैं। खूनी भेड़िये।

खाकर मारेगा एक-एक कारकूं।

पर्दे से निकलकर बाहर आ गए फिल्म के किरदार!!!

ग रुं

ग रुं

PDF Compressor Pro
fenzz
Chanchal Rose

PDF Compressor Pro
Chanchal Rose

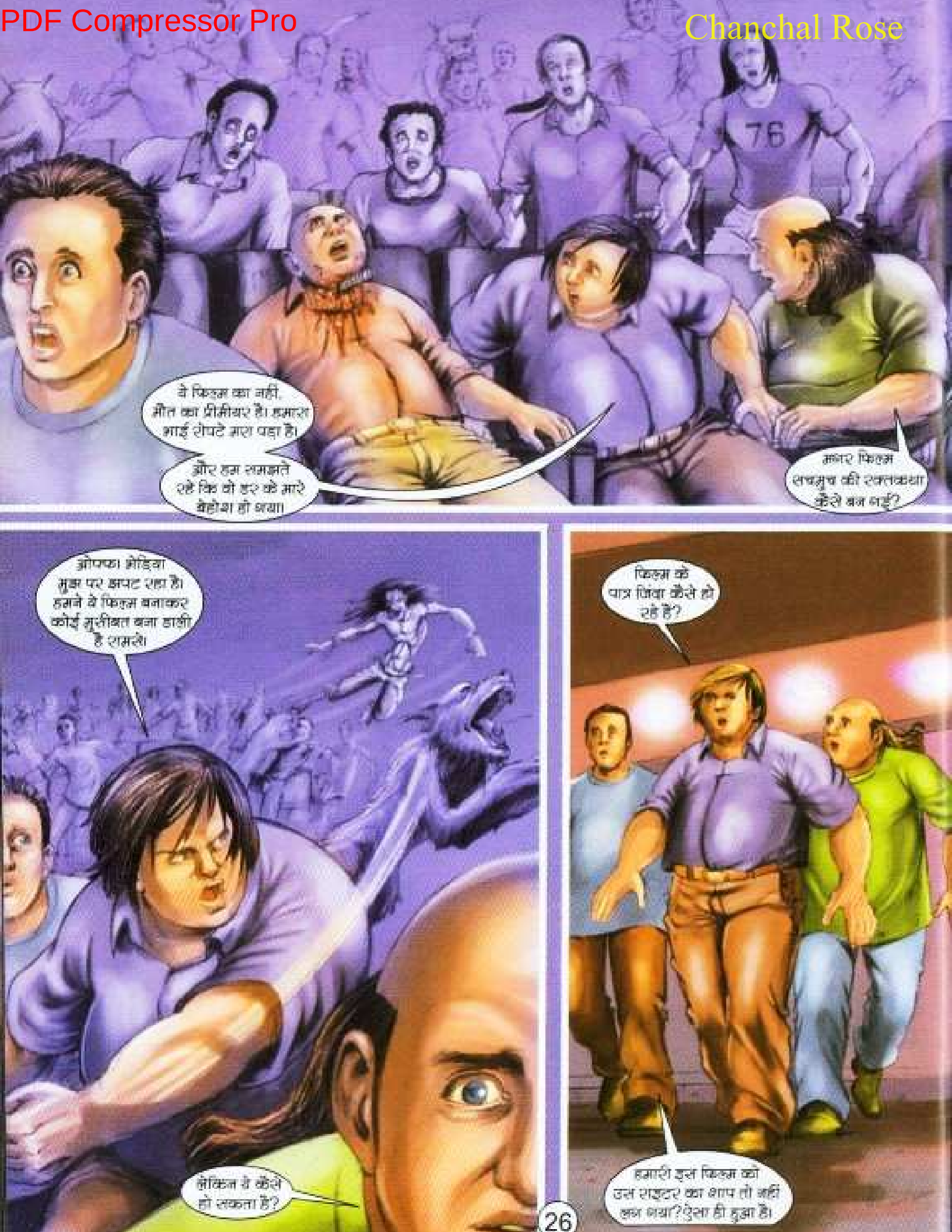

PDF Compressor Pro
Chanchal Rose

PDF Compressor Pro
Chanchal Rose

PDF Compressor Pro
Chanchal Rose

PDF Compressor Pro

Chanchal Rose

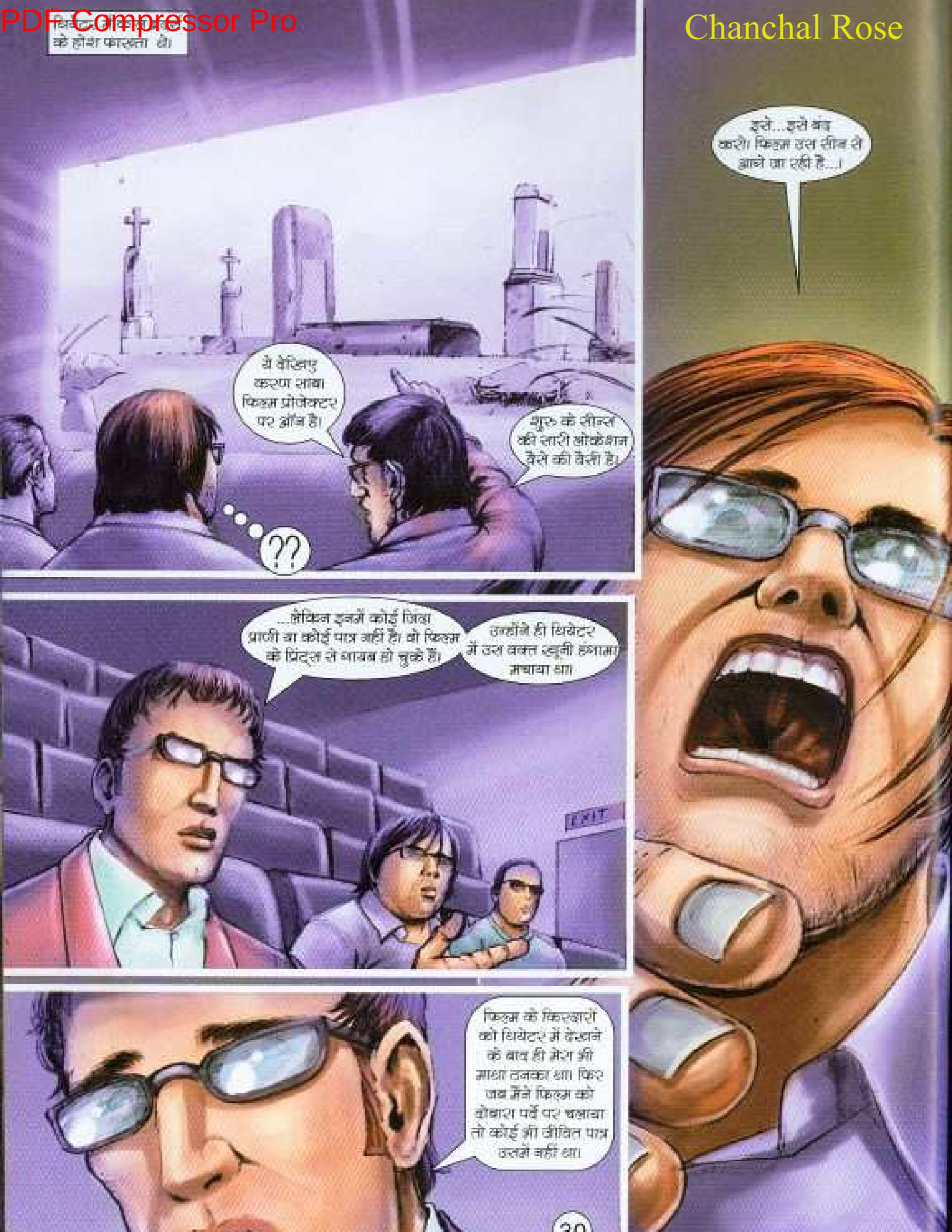

PDF Compressor Pro

Chanchal Rose

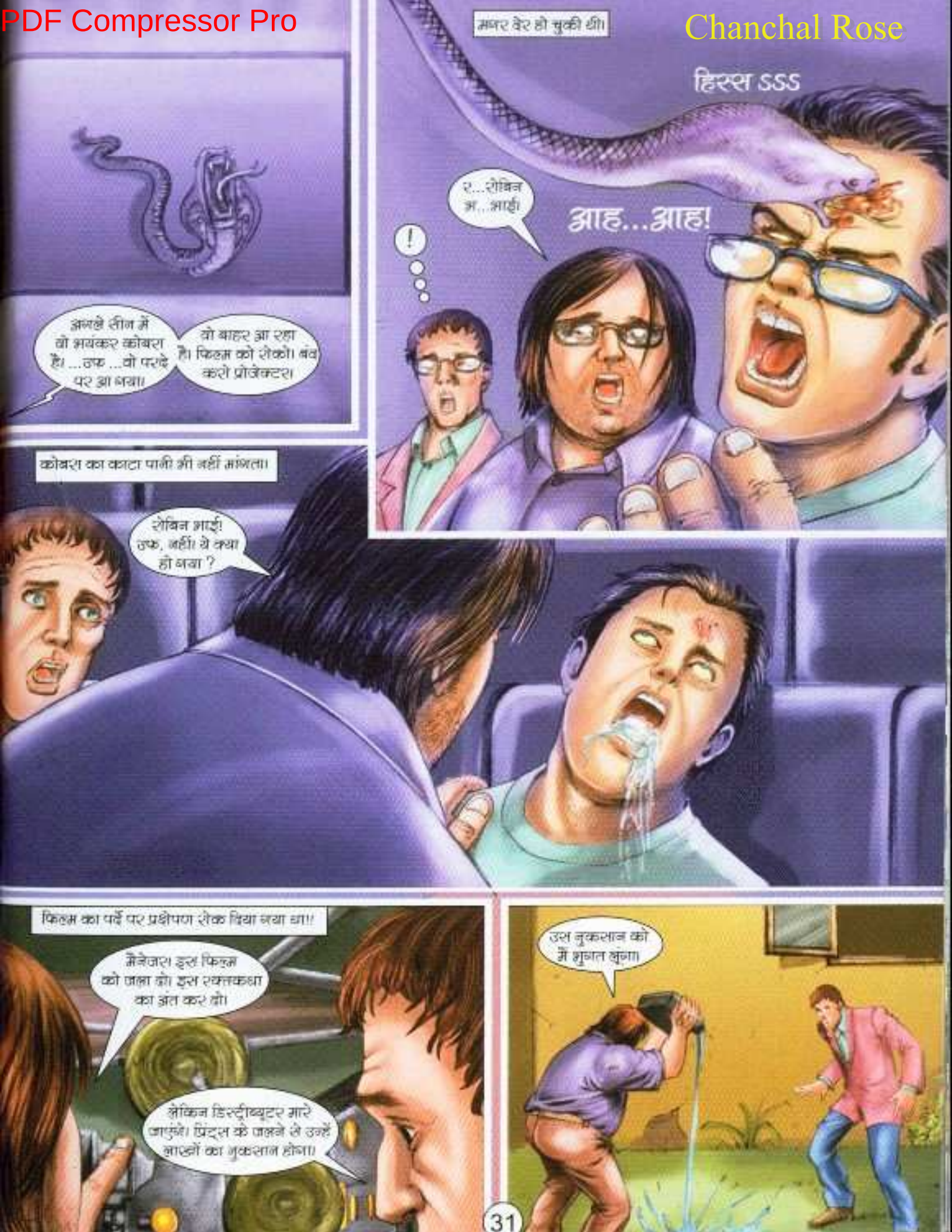

PDF Compressor Pro
Chanchal Rose

ये खंजर है। ये मुझे मारने आया है।

हां...हां जलाता हूं! जलाता हूं!

फिल्म के प्रिंट्स को जला दो मैनेजर!

आह!

खच्चाक

ओह! खंजर गायब हो रहा है। यानी फिल्म का वो हिस्सा खाक हो रहा है जहां पर खंजर के सीन्स रहे होंगे। यानी अब प्रिंट से पैदा हुए शैतानों का खौफ समाप्त हो जाएगा।

PDF Compressor Pro
Chanchal Rose

PDF Compressor Pro

Chanchal Rose

PDF Compressor Pro
Chanchal Rose

PDF Compressor Pro

Chanchal Rose

PDF Compressor Pro
Chanchal Rose

फिर हॉस्पिटल में-

मुझे इंस्पेक्टर पोस्टमार्टम कहते हैं।

मुझसे क्या काम है?

फटफट हो रहा है जैसे तुम्हें पहले से ही पता है।

क...क्या मतलब? क्या पता है?

तुम्हारे हॉस्पिटल की नर्स की गलत इंजेक्शन के कारण मौत हो गई है।

और वो इंजेक्शन उसे तुमने दिया है।

म...मैंने? मैं तो ऑपरेशन रूम में था।

हां! मगर तुम्हारे इस बॉई ब्वॉय ने बयान दिया है कि तुम ही उस नर्स को वो इंजेक्शन लगाने वाले थे। नर्स ने प्रेस्क्रिप्शन पर लिखा वो इंजेक्शन भी उसी से मंगवाया था।

हां...लेकिन

बाकी स्टेटमेंट थाने चल कर देना। यू आर अंडर अरेस्ट।

!

PDF Compressor Pro

Chanchal Rose

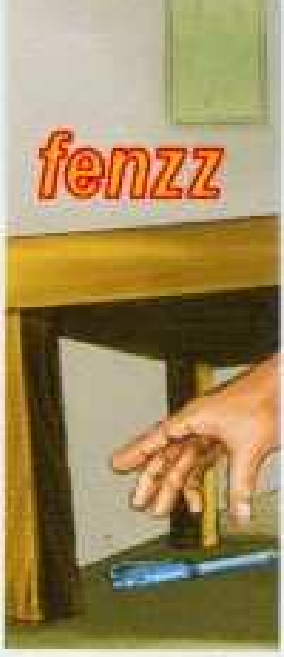

PDF Compressor Pro

इंस्पेक्टर पोस्टमार्टम। जो केस का अच्छी तरह से पोस्टमार्टम करता है।

Chanchal Rose

PDF Compressor Pro

Chanchal Rose

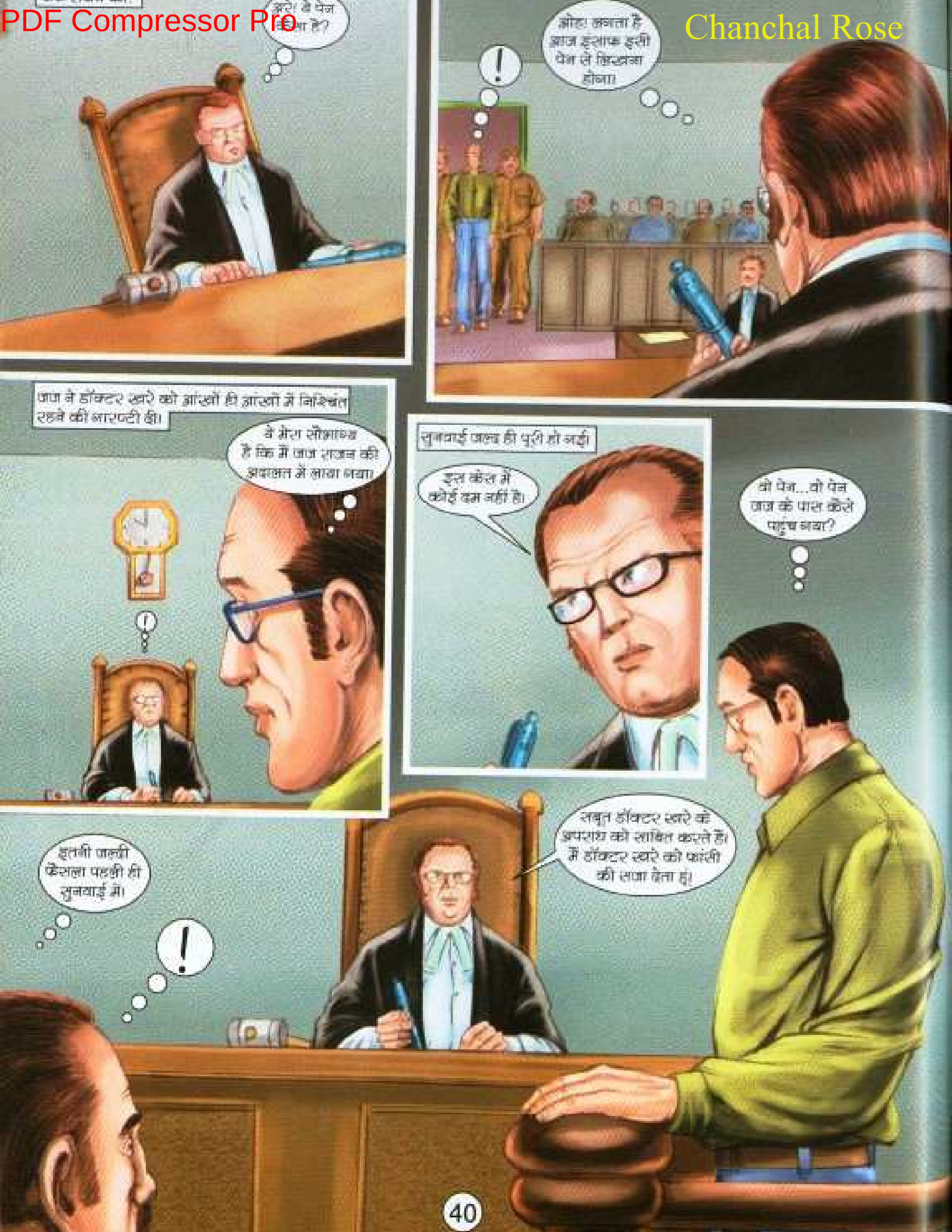

PDF Compressor Pro
Chanchal Rose

PDF Compressor Pro
Chanchal Rose

PDF Compressor Pro
Chanchal Rose

प्यारे दोस्तों,

रक्त कथा आपके हाथों में है। एक मजबूर पिता के शोषण की रक्तकथा है यह। चमत्कारी कलम ने जिसे इंसाफ दिलाया है। आशा करता हूं कि कहानी आपको पसंद आई होगी। आदिल जी ने बहुत मेहनत से उम्दा आर्टवर्क बनाया किंतु प्रदीप सहरावत जी के अति व्यस्त होने के कारण कलरिंग इफेक्ट में वो जान ना आ पाई। यहां तक कि कलरिंग में बहुत सी त्रुटियां भी हैं जिन्हें ठीक करने का उनके पास समय नहीं था। इसलिए मजबूरीवश मुझे ऐसी ही कॉमिक आपके समक्ष प्रस्तुत करनी पड़ी। इसी तरह की कमियां कोबी भेड़िया की **कोबी दक्षिणा** में भी रहीं। बहुप्रतिक्षित **अमर प्रेम** जोकि इसी सैट में प्रकाशित हुई है ये भी आर्टिस्ट धीरज जी ने बहुत ही अनप्रोफेशनल रवैया दिखाते हुए बीच में कई पेजिस खुद ना बनाकर किसी नौसीखिए आर्टिस्ट से बनवाकर आपको परोस दिए। अब आप कहेंगे कि हमनें इन्हें ठीक क्यों नहीं करवाया। हमने उन्हें इस विषय में अवगत करवाया तो उनका कहना था कि हमने आपको अपना बेहतरीन काम दिया है। इसी वजह से हमें ऐसे महान आर्टिस्ट से हमेशा के लिए बाय-बाय बोलना पड़ा है जोकि राज कॉमिक्स के फैन्स की भावनाओं से खिलवाड़ करते हैं।

थ्रिल हॉरर सीरीज की आगामी कॉमिक है **लुक छुप जाना। लुक छुप जाना** एक बहुत ही अच्छी कॉमिक बनी है। मुझे विश्वास है कि आप सभी को पसंद आएगी। अब **राज कॉमिक्स** फोरम पर लिखी गई हॉरर कहानी **लाल आतंक (लेखक-बिस्वजीत, बुबई)** का अगला भाग पढ़ें–

मास्टरजी और उनके परिवार में जीवन के प्रति सच्ची, सही आदर्श, सही शिक्षा और ऐसी दूसरी अच्छी चीजें विरासत में ही चली आई थीं। मास्टरजी का एकमात्र पुत्र दिनेश मेरा बचपन का और आज तक का सबसे गहरा दोस्त रहा है। दिनेश भी मेरी तरह इंजीनियरिंग पढ़ने लखनऊ चला गया था बारहवीं के बाद और मैं आ गया दिल्ली। बस तब से धीरे-धीरे हम दोनों का कॉन्टैक्ट छूट सा जाने लगा और पिछले कुछ व्यस्त सालों में मैं इतना काम में उलझा रहा कि ये सम्बन्ध बिल्कुल ही टूट गया था। कल जब अचानक ही दिनेश का लैटर मिला तो एकदम से जैसे सारी यादें आंखों के सामने खेलने लगीं। मेरे इंजीनियरिंग पढ़ के शहर में नौकरी पाने के बाद मैं मां को भी यहीं ले आया था और फिर पांच साल पहले गांव का घर भी बेच दिया था। बस वो आखिरी बार था जब मैं गांव गया था। दिनेश के पत्र को पढ़कर याद आता है वो सब कुछ जब हम दोनों स्कूल से लौटते थे साथ में और कभी जामुन तोड़ने सरपंच जी के बागान में चुपके से घुसते थे। कई बार तो पकड़े जाने से बचे भी थे और दिनेश के पिता की वो कहानियां जो वो स्वतंत्रता संग्राम के बारे में हमें बताते थे कि किस तरह से लालगंज जेल में देशभक्तों के साथ जुल्म होता था। मैं और दिनेश हमेशा कहानी सुनने के अंत में कह उठते थे कि हम भी अंग्रेजों के खिलाफ लड़ेंगे। वो सब दिन ना जाने कहां गए। कहानी जारी रहेगी, अगले ग्रीन पेज में...

अपने पत्र हमें आप इस पते पर भेजें : ग्रीन पेज नं. 272, राजा पॉकेट बुक्स, 330/1, बुराड़ी, दिल्ली-84

Forum पर अपनी पोस्ट आप www.rajcomics.com पर करें।

धन्यवाद

आपका–संजय गुप्ता